Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2021, VOL-9/47

सतत और व्यापक मूल्यांकनः एक बुनियादी समझ

अभिषेक दुबे[1] & नीता सिंह[2], Ph. D.

[1]शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

[2]शोध निर्देशिका, पूर्व विभागाध्यक्ष (शिक्षाशास्त्र विभाग), के0 एन0 आई0 पी0 एस0, सुल्तानपुर

Paper Received On: 25 SEPT 2021

Peer Reviewed On: 30 SEPT 2021

Published On: 1 OCT 2021

Abstract

शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास का आधार होने के कारण प्रारम्भिक स्तर पर एक सार्वभौमिक आवश्यकता है। हमारे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का लक्ष्य बच्चों के लिये ऐसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है, जिससे बच्चों में प्रजातांत्रिक मूल्यों व व्यवहारों के प्रति कटिबद्धता, सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक व अन्य आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता तथा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता उत्पन्न हो।

''निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009'' ने शिक्षा को एक ऐसी सतत गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा है, जो बच्चों को गरिमामय जिन्दगी उपलब्ध कराती है और जहाँ बच्चे 'भय' और 'तनाव' से मुक्त होकर ज्ञान का सृजन करते हैं।

इसका अभिप्राय यह है कि ऐसी बाल–केन्द्रित एवं बाल अनुकूल शिक्षा हो जो असमानता को दूर करने के साथ–साथ समान शैक्षिक अवसरों को उपलब्ध कराती हो। जाति, धर्म, मत या लिंग के भेदभाव के बिना सभी विद्यार्थियों की पहुंच गुणवत्तापरक शिक्षा तक हो, साथ ही शिक्षा विद्यार्थियों में जिज्ञासा, सृजनशीलता, वस्तुनिष्ठता जैसी योग्यताओं तथा मूल्यों का विकास करते हुए समस्या समाधान तथा निर्णय लेने के कौशल को विकसित करती हो।

इन सरोकारों पर चिन्तन करते हुए ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005'' में शिक्षा के लक्ष्य के संबंध में ''बच्चों को क्या पढ़ाया जाय और कैसे पढ़ाया जाय'' की कसौटी पर व्यापक रूप से विचार किया गया है।

इस दस्तावेज में प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा प्रक्रिया में ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ने, पढाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त करने, पाठ्यचर्या को बच्चों के सर्वांगीण विकास का माध्यम बनाने, परीक्षा को लचीली और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ने और छात्रों में मानवीय मूल्यों का विकास करने पर बल दिया गया है।

यह समझ भी बनी कि सही मायने में बच्चों की शिक्षा तभी हो पायेगी जब उनके पास इसका अवसर होगा कि वे अखंड अनुभव की पूर्ण रचना कर सके व ज्ञान का सृजन कर सके।

प्रारम्भिक शिक्षा का लक्ष्य बच्चों में वैज्ञानिक मनोवृति एवं तार्किक चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास करना है ताकि उनमें संस्कृति, परंपरा तथा समुदाय के अंधानुकरण के स्थान पर मानवता के कल्याण, अन्य समुदायों की संस्कृति और परंपरा के प्रति सम्मान विकसित हो और वे गरीबी, लिंग भेद, जाति तथा सांप्रदायिक झुकाव आदि शोषण व अन्यायपूर्ण व्यवहारों से मुक्त हो सकें। शिक्षा का लक्ष्य वैयक्तिक विशिष्टता को सम्मान प्रदान करना भी है। प्रत्येक बच्चे में अपनी योग्यताएँ, क्षमताएँ और कौशल होते हैं जिनके संवर्द्धन से न केवल वैयक्तिक जीवन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि समुदाय का जीवन भी समृद्ध होगा।

इन शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति तभी संभव है जब छात्रों के विकास का मूल्यांकन करने के लिए वैध एवं विश्वसनीय पद्धति भी हो। ऐसा अनुभव रहा है कि विद्यालयों में मूल्यांकन का जोर शिक्षा के सरोकारों पर प्रतिपुष्टि प्राप्त करने के स्थान पर यह जानने में रहा है कि कौन–कौन से बच्चे पास या फेल हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालयों में लागू मूल्यांकन की पद्धतियाँ शिक्षा के लक्ष्यों के संबंध में समग्र प्रतिपुष्टि (फीडबैक) नहीं प्रस्तुत करती हैं, वरन् केवल चुनिंदा आयामों पर बच्चे के शैक्षिक एवं अकादमिक प्रगति के बारे में ही जानकारी देती हैं। उक्त सीमित उद्देश्यों के दृष्टिगत भी अभी प्रचलित मूल्यांकन व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रस्तावना

शिक्षा का प्राथमिक प्रयोजन पुरुष और महिला में पहले से मौजूद सम्पूर्णता को प्रकट करना है (स्वामी विवेकानंद), शिक्षा का प्रयोजन बच्चे/व्यक्ति का चहुँमुखी विकास करना है। 21वीं सदी के लिए अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में यूनेस्को ने मनुष्यों के जीवन के चार स्तरों का उल्लेख किया है, जैसे भौतिक, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक। इस प्रकार, चहुँमुखी विकास के रूप में शिक्षा का प्रयोजन भौतिक, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों में प्रत्येक बच्चे की छुपी हुई संभाव्यता का अनुकूलन करना है। देश में पहली बार सीबीएसई ने चहुँमुखी विकास के इस विशाल लक्ष्य को व्यवहार में लाने का प्रयास किया।

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में वैश्वीकरण का शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ है। शिक्षा के बढ़ते वाणिज्यीकरण को सर्वत्र देखा जा रहा है। अतः विद्यालयों को वस्तु बनाने और विद्यालयों के लिए बाजार संबंधी संकल्पनाओं के अनुप्रयोग और विद्यालयों की गुणवत्ता पर बढ़ते दबाव के प्रति सतर्क रहने की जरूरत है। लगातार बढ़ते प्रतिस्पर्धी परिवेश, जिसमें विद्यालयों को भी घसीटा जा रहा है, और माता–पिता की बढ़ती उम्मीदें बच्चों पर तनाव और चिंता का असहनीय भार डाल रही हैं, जिससे बहुत कम उम्र के बच्चों की व्यक्तिगत वृद्धि और विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है और इस प्रकार उनके सीखने का आनंद कम हो रहा है।

छात्रों की समझ, शैक्षिक लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति और एक सामाजिक स्थल के रूप में विद्यालय की प्रकृति सैद्धांतिक रूप के अनुसार कक्षा अभ्यास को मार्गदर्शन देने में हमारी सहायता हो सकती है। इस प्रकार संकल्पनात्मक विकास संबंधों को गहरा और समृद्ध करने और अर्थों के नए स्तरों के अर्जन की सतत प्रक्रिया है। यह उन सिद्धांतों का विकास है कि बच्चों का प्राकृतिक और सामाजिक संसार होता है, जिसमें उनका आपसी संबंध शामिल हैं, जो उन्हें यह समझाता है कि चीजें ऐसी क्यों है, इनके कारणों और प्रभावों के बीच संबंध और निर्णय तथा कार्य करने के आधार क्या है। इस प्रकार मनोवृत्तियां, भावनाएं और मूल्य बोधात्मक विकास के अविभाज्य हिस्से हैं और यह भाषा के विकास, मानसिक प्रदर्शन, संकल्पना और तर्क षक्ति के विकास से जुड़े हैं।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation & CCE) छात्रों की विद्यालय–आधारित मूल्यांकन की एक प्रणाली है। 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत यह एक अनिवार्य मूल्यांकन प्रक्रिया है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के समुचित विकास का निरंतर और नियमित आकलन हैं जिसमें विकास के सभी पहलुओं का विभिन्न विधियों व उपकरणों द्वारा व्यापक आकलन किया जाता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों के वृद्धि और विकास के समस्त क्षेत्रों का सतत एवं नियमित आकलन है। इसके द्वारा विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है।

इसे अच्छी तरह समझने के लिए हम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मौजूद तीन शब्द सतत, व्यापक और मूल्यांकन का जानने और समझने की कोशिश करते हैं।

सतत– सतत का शाब्दिक अर्थ होता है – लगातार। इस प्रकार सतत मूल्यांकन लगातार चलने वाली प्रक्रिया हैं। इसमें बच्चे का आकलन सतत् एवं नियमित रूप से किया जाता है जो पूरे वर्ष औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से चलता रहता है।

सतत आकलन एवं कक्षा शिक्षण प्रक्रिया दोनों साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें न सिर्फ विषय आधारित बल्कि सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का भी नियमित रूप से आंकलन किया जाता है।

व्यापक – व्यापकता से आशय बच्चे के समस्त कौशलों/गुणों के विकास से हैं जिसमे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास भी सम्मिलित हैं जो एक अच्छा नागरिक बनने के लिए आवश्यक होता है। इन गुणों का विकास धीमी गति से होता है तथा वांछित परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। व्यापक आकलन, अवलोकन, चर्चा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

मूल्यांकन – मूल्यांकन कक्षा अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ बच्चों के सीखने की गति, अवधारणा, ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल, व्यवहार, अनुभव आदि को जानने के लिए योजनाबद्ध तरीके से साक्ष्यों का संकलन, विश्लेषण, व्याख्या एवं सुझाव देने की प्रक्रिया है। साक्ष्यों का यह संकलन कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय शिक्षकों द्वारा विभिन्न विधियों व उपकरणों के माध्यम से किया जाता है। बच्चों का मूल्यांकन बहुत जरूरी हैं। मूल्यांकन–प्रक्रिया जितनी बेहतर होगी विकास की गति भी उतनी ही बेहतर होगी क्योंकि मूल्यांकन के आधार पर आवश्यक सुधार कर उपलब्धि स्तर को बढ़ाया जा सकता है।

मूल्यांकन व आकलन में अन्तर – आकलन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो छोटे–छोटे उद्देश्यों के लिए किया जाता है। आकलन से निरंतर सुधार किया जाता है। मूल्यांकन विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाता हैं। मूल्यांकन द्वारा शिक्षकों, बच्चों व अभिभावकों को फीडबैक प्राप्त होता हैं। यह कक्षा उन्नति का आधार होता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का आशय यह नहीं है –

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन परीक्षा का पर्याय नहीं है और न ही बच्चों का नियमित परीक्षण है।
2. इसका आशय बच्चों को ग्रेड या अंक देना या फेल– पास का सर्टिफिकेट देना भी नहीं है।
3. बच्चों को नाम देना जैसे मंदबुद्धि, कमजोर, होशियार आदि।
4. बच्चों को डर के दबाव में अध्ययन के लिए प्रेरित करना।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

5. बच्चे की प्रगति की तुलना अन्य बच्चे से करना।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएँ/महत्व

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा बच्चे के विकास के सभी पहलुओं का पता चलता हैं। इसके द्वारा शिक्षक को सीखने के दौरान छात्रों को होने वाली कठिनाइयों का पता चलता हैं। शिक्षक अनेक गतिविधियों एवं उपकरणों के माध्यम से यह पता करते हैं कि बच्चों ने क्या सीखा एवं उन्हें सीखने में कहाँ मदद की आवश्यकता है। इस प्रकार वे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाते हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की विशेषताएँ/महत्त्व निम्नलिखित हैं –

- यह छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता हैं।
- यह छात्रों द्वारा सीखने के क्रम में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाने में सहायक हैं।
- इसके द्वारा सीखने के दौरान छात्रों को होने वाली कठिनाइयों को कम किया जाता हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. विभिन्न विषयों में निश्चित समय उपरांत बच्चों की प्रगति जानना।
2. बच्चों के व्यवहार में हुए परिवर्तनों का पता लगाना।
3. प्रत्येक बच्चे को सीखने और समुचित विकास में मदद करना।
4. सृजनशीलता को बढ़ावा देना।
5. बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष जरूरतों का पता लगाना।
6. बच्चों को सीखने में कठिनाइयों को दूर करने के लिए अध्यापन की उपयुक्त योजना बनाना।
7. बच्चों की रुचि जानना।
8. कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना।
9. बच्चों में परीक्षा के प्रति व्याप्त भय व दबाव को दूर करना और व स्व–आकलन (Self Assessment) के लिए प्रोत्साहित करना।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के सिद्धांत

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन निम्नलिखित आधारभूत सिद्धांत पर आधारित हैं –

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन तथा सीखने की प्रक्रिया साथ–साथ चलता है। इसमें बच्चे का मूल्यांकन सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने के बाद ही किया जाता है।

बच्चे की प्रगति की तुलना उसके स्वयं की पिछली प्रगति से की जानी चाहिए न कि अन्य बच्चों की प्रगति से।

बच्चे के सीखने की गति एवं क्षमता के अनुसार अलग–अलग गतिविधियों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी क्षमता के अनुसार सीख सके।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्षेत्र

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के दो मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं –

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र
2. सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र – इसमें बच्चों को पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों का मूल्यांकन किया जाता है जो बच्चों के मानसिक विकास में सहायक होते हैं। संज्ञानात्मक क्षेत्र का आकलन दो प्रकार से किया जाता है।

- संरचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)
- योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)

2. सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र – इसके अंतर्गत सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे खेलकूद, योग, साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सहयोग, अनुशासन, अभिवृत्ति आदि को शामिल किया जाता है।

निष्कर्ष

शिक्षा का संबंध बच्चों के समुचित विकास से हैं। बच्चों के समुचित विकास के लिए विकास के सभी पहलुओं का निरंतर और व्यापक आकलन आवश्यक हैं।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation & CCE) बच्चों के विकास के सभी पहलुओं के मूल्यांकन की एक प्रणाली हैं। यह नियमित एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ–साथ चलती हैं। इसके द्वारा यह पता लगाया जाता हैं कि बच्चों ने क्या सीखा, उन्हें सीखने में क्या–क्या कठिनाइयाँ आ रही हैं? बच्चों को उनकी क्षमता व रुचि के अनुसार सीखने का पर्याप्त अवसर दिया जाता है ताकि उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके।

सन्दर्भ सूची

Enhanced Framework for Continuous and Comprehensive Evaluation (2013). Retrieved 29 September 2021, from https://www.upefa.com/ upefaweb/downloads /CCEHandbook13-14.pdf

Bloom B.S (ed.) (1956). Taxonomy of Educational Objectives: Handbook I, New York: Cognitive Domain David Mckay Company,

NCERT (1971). Report of the committee on examination, New Delhi : CABE, Ministry of Education on Social welfare, India

NCERT (1988). National Curriculum for Elementary and Secondary Education: A Framework, New Delhi. Ministry of Education on Social welfare, India

NCERT (2000) National Curriculum Framework for school education. Salient Features and Summary. New Delhi: National Council of Education Research and Training.

NCERT (2001). Grading in Schools, New Delhi : National Council of Education Research and Training.

School Based Continuous and Comprehensive Evaluation in CBSE, 2009, CBSE Articles, Class 09, Class 10 , retrieved from http://mycbseguide.com/blog/school-based-continuousand-comprehensive-evaluation-in-cbse/

http://en.wikipedia.org/wiki/Continuous_and_comprehensive_evaluation

http://cce.icbse.com/advantages-cce-system-cbse/#ixzz1mJWtmlJD

Advantages of CCE System in CBSE, http://cce.icbse.com/advantages-cce-system-cbse/

http://www.cbse.nic.in/cce/casestudies.pdf

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language